ICAR- CENTRAL PLANTATION CROPS RESEARCH INSTITUTE

Indian Council of Agricultural Research - Central Plantation Crops Research Institute (ICAR-CPCRI), Kasaragod, is celebrating its 100th year in research. Established as a Coconut Research Station in 1916, the Institute has been undertaking research and extension activities on plantation crops, especially coconut, arecanut and cocoa for nearly a century.

The Coconut Research Station at Kasaragod in Kerala was initially established in 1916 by the Presidency of Madras and subsequently it was taken over by the Indian Central Coconut Committee in 1948. The ICAR- Central Plantation Crops Research Institute (ICAR-CPCRI) has come into existence in 1970 as one of the agricultural research institutes in the National Agricultural Research System (NARS) under the ICAR by merging Central Coconut Research Station, Kasaragod, Central Coconut Research Station, Kayamkulam as well as Central Arecanut Research Station. Vittal and its five substations at Palode and Kannara (Kerala), Hirehalli (Karnataka), Mohitnagar(West Bengal) and Kahikuchi(Assam).

The Central Coconut Research Station (CCRS) at Kayamkulam was established in 1948 by the Indian Central Coconut Committee. The CCRS had its origin in the erstwhile Agricultural Research Laboratory(Office of the Plant Pathologist) started in 1937, with its headquarters at Kollam and a field station at Kayamkulam mainly to tackle plant protection problems of coconut. The ICAR took over the administrative control of CCRS from 1st April, 1966 following the abolition of the Commodity Committees. With the establishment of ICAR-CPCRI in 1970 at Kasaragod, Kayamkulam centre was established as one of the regional stations.

The research efforts on arecanut started as early as 1947 through the establishment of adhoc arecanut committee by ICAR to study the problems of arecanut industry. The committee gave a firm foundation for arecanut research by establishing the Central Arecanut Research Station (CARS) at Vittal in 1956. Consequent to the establishment of the ICAR-CPCRI in 1970, the CARS became the Regional Station of the Institute.

The Research Centre (RC), Kahikuchi came into force in 1959 as Regional Arecanut Research Station under Central Arecanut Research Station (CARS). Later, the centre was amalgamated with the ICAR-CPCRI in 1970 as one of the research centres.

The Research Centre, Mohitnagar(WB) was established in the year 1958 as Regional Arecanut Research Station under Central Arecanut Research Station. Later, the centre was merged with ICAR-CPCRI, Kasaragod in 1970 and designated as one of the research centres.

The ICAR-CPCRI Research Centre Kidu was established as Seed Farm in the year 1972 with an aim to produce genetically superior planting materials of coconut, arecanut, cocoa and cashew and subsequently upgraded to Research Centre in 2002. At present, the farm has 120 hectare of lease land of which 92.5 hectare are under coconut. 7.5 hectare under arecanut and 2.5 hectare under cocoa. International Coconut Gene Bank for South Asia (ICG-SA) under Bioversity-Coconut Genetic Resources Network (COGENT) was established at this centre in the year 1998.

The Minicoy centre, previously known as 'ICAR Research Complex for Lakshadweep' was established at Minicoy Island during 1976, under the overall administrative control of CPCRI. Consequent upon the formation of the Island Zone under the ICAR system, the station was merged with the ICAR-Central Agricultural Research Institute (ICAR-CARI), Port Blair, Andamans during 1989. Subsequently, based on the repeated requests from the farming community and the Department of Agriculture, Union territory of Lakshadweep, the Station was brought again under the administrative control of ICAR-CPCRI during 1994 and operated as one of the Regional Stations of CPCRI till 2011. The centre has also received the farm land and facilities of the erstwhile Research Centre of Central Marine Fisheries Research Institute (CMFRI) functioned at Minicoy during 2006. Since 2011, the station at Minicoy functions as a demonstration-cum-production centre for enhancing the production and availability of fruits and vegetables in the Island.

The All India Co-ordinated Coconut and Arecanut Improvement Project (AICCAIP) started functioning from 1972 with its headquarters at CPCRI, Kasaragod. Since 1986, it functions as the All India Coordinated Research Project on Palm (AICRPP) and is presently implemented in 21 Centre's located in 12 State Agricultural Universities and one Central Institute. CPCRI is also the mother institute in the ICAR plantation crops sector and has nurtured the establishment of four institutes, viz. ICAR- Central Coastal Agricultural Institute of Spices Research and ICAR- Directorate of Cashew Research.

The Institute has provided an inspiring leadership in research and development of technologies contributing to India's emergence as the world leader in the production of coconut and arecanut. The Institute has added many feathers to its crown including development of high yielding varieties in all mandate crops, new biotechnological applications, bio-control for diseases and pests, production technologies for enhancing productivity of cropping system, improved machineries for post and pre-harvest processes and new value added products. Further its achievement in development of technologies, the institute has been successful in taking it to the farmers and other stake holders through innovative technology transfer initiatives. Recognizing the yeoman services rendered, ICAR bestowed the 'Sardar Patel Outstanding Institution Award' to CPCRI in the year 2002.

Department of Posts is pleased to issue a set of two Commemorative Postage Stamps on ICAR-Central Plantation Crops Research Institute on celebration of 100 illustrious years of excellence in research by the Institute.

Credits:

Text	:	Based on the information received from proponent
Stamp / Miniature Sheet/ FDC/Brochure	:	Sh. Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भाकृअनुप - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीपीसीआरआई), कासरगोड, अनुसंधान के क्षेत्र में अपना 100वां वर्ष मना रहा है। वर्ष 1916 में नारियल अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापित, यह संस्थान लगभग एक शताब्दी से रोपण फसलों, विशेष रूप से नारियल, सुपारी और कोको पर अनुसंधान तथा विस्तार के कार्यकलाप करता आया है।

नारियल अनुसंधान संस्थान शुरू में मद्रास प्रेसीडेंसी द्वारा वर्ष 1916 में केरल में कासरगोड में स्थापित किया गया और बाद में, 1948 में इसे भारतीय केन्द्रीय नारियल समिति द्वारा अपने अधिकार में ले लिया गया। आईसीएआर - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर - सीपीसीआरआई) 1970 में अस्तित्व में आया। यह आईसीएआर के तहत राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) के कृषि अनुसंधान संस्थानों में से एक था, इसे केन्द्रीय नारियल अनुसंधान केन्द्र, कासरगोड, केन्द्रीय नारियल अनुसंधान केन्द्र, कयामकुलम और केन्द्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र, विट्टल तथा पलोड व कन्नर (केरल), हिरेहल्ली (कर्नाटक), मोहितनगर (पश्चिम बंगाल) और कहिकुच्चि (असम) के पांच उप-केन्द्रों का विलय करके बनाया गया है।

केन्द्रीय नारियल अनुसंधान केन्द्र (सीसीआरएस), कयामकुलम की स्थापना 1948 में भारतीय केन्द्रीय नारियल समिति द्वारा की गई। सीसीआरएस की शुरूआत मुख्य रूप से नारियल-पादप-संरक्षण संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए मूल रूप से पूर्ववर्ती कृषि अनुसंधान प्रयोगशाला (पादप रोग विज्ञानी का कार्यालय) के रूप में वर्ष 1937 में हुई थी, जिसका मुख्यालय कोलम में था और एक क्षेत्रीय केन्द्र कयामकुलम में था। आईसीएआर ने कोमोडिटी-समितियों को समाप्त करते हुए 1 अप्रैल, 1966 से सीसीआरएस का प्रशासनिक नियंत्रण अपने अधिकार में ले लिया। 1970 में कासरगोड में आईसीएआर-सीपीसीआरआई की स्थापना हो जाने पर, कयामकुलम केन्द्र को एक क्षेत्रीय केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया।

सुपारी उद्योग की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए, आईसीएआर ने तदर्थ आधार पर सुपारी समिति की स्थापना करके 1947 के शुरू में ही सुपारी संबंधी अनुसंधान करने के प्रयास शुरू कर दिए थे। वर्ष 1956 में विट्टल में केन्द्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र (सीएआरएस) की स्थापना करके समिति ने सुपारी अनुसंधान के लिए एक सुदृढ़ नींव डाली। 1970 में आईसीएआर-सीपीसीआरआई की स्थापना के परिणामस्वरूप, सीएआरएस संस्थान का क्षेत्रीय केन्द्र बन गया।

अनुसंधान केन्द्र (आरसी), कहिकुचि केन्द्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र (सीएआरएस) के अधीन क्षेत्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र के रूप में 1959 में स्थापित किया गया। बाद में, 1970 में इस केन्द्र को एक अनुसंधान केन्द्र के रूप में आईसीएआर-सीपीसीआरआई के साथ समामेलित कर दिया गया।

अनुसंधान केन्द्र (आरसी), मोहितनगर (पश्चिम बंगाल) की स्थापना केन्द्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र के अधीन क्षेत्रीय केन्द्रीय सुपारी अनुसंधान केन्द्र के रूप में वर्ष 1958 में की गई। बाद में, 1970 में इस केन्द्र का आईसीएआर-सीपीसीआरआई, कासरगोड में विलय कर दिया गया और इसे एक अनुसंधान केन्द्र के रूप में नामित किया गया।

आईसीएआर-सीपीसीआरआई अनुसंधान केन्द्र, किडू की स्थापना एक बीज फॉर्म के रूप में वर्ष 1972 में की गई। इसका उद्देश्य नारियल, सुपारी, कोको और काजू की आनुवंशिक रूप से उत्तम रोपण सामग्री पैदा करना था। बाद में, 2002 में इसका उन्नयन करके इसे अनुसंधान केन्द्र बना दिया गया। इस समय, फार्म के पास 120 हेक्टेयर लीज भूमि है जिसमें से 92.5 हेक्टेयर भूमि नारियल, 7.5 हेक्टेयर भूमि सुपारी और 2.5 हेक्टेयर भूमि कोको के लिए है। बायोवर्सिटी - कोकोनट जेनेटिक रिसोर्सेज, नेटवर्क (सीओजीईएनटी) के तहत इस केन्द्र में वर्ष 1998 में इंटरनेशनल कोकोनट जीन बैंक फॉर साउथ एशिया (आईसीजी-एसए) की स्थापना की गई।

मिनिकॉय केन्द्र, जिसे पहले 'आईसीएआर लक्षद्वीप अनुसंधान कॉम्प्लेक्स' के रूप में जाना जाता था, की स्थापना मिनिकॉय द्वीप में सीपीसीआरआई के समग्र प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन, 1976 के दौरान की गई। आईसीएआर प्रणाली के तहत द्वीप क्षेत्र के गठन के परिणामस्वरूप, इस केन्द्र का 1989 के दौरान आईसीएआर-केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीएआरआई) पोर्ट ब्लेयर, अंडमान में विलय कर दिया गया। तदनन्तर, कृषि समुदाय और कृषि विभाग, संघ राज्यक्षेत्र लक्षद्वीप द्वारा बार-बार अनुरोध किए जाने पर, केन्द्र को 1994 के दौरान पुन: आईसीएआर-सीपीसीआरआई के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कर दिया गया और 2011 तक सीपीसीआरआई के एक क्षेत्रीय केन्द्र के रूप में प्रचालित किया गया। इस केन्द्र ने 2006 के दौरान मिनिकॉय में कार्यरत केन्द्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) के पूर्ववर्ती अनुसंधान केन्द्र की कृषि भूमि और अन्य सुविधाएं भी प्राप्त की हैं। 2011 से मिनिकॉय स्थित केन्द्र, द्वीप में फलों एवं सब्जियों के उत्पादन और उनकी उपलब्धता को बढ़ाने के लिए प्रदर्शन-व-उत्पादन केन्द्र के रूप में कार्य कर रहा है।

अखिल भारतीय समन्वित नारियल और सुपारी सुधार परियोजना (एआईसीसीएआईपी) ने सीपीसीआरआई, कासरगोड में अपने मुख्यालय से 1972 से कार्य करना शुरू किया। यह 1986 से, खजूर संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपीपी)के रूप में कार्य कर रहा है और इस समय इसे 12 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में स्थित 21 केन्द्रों और एक केन्द्रीय संस्थान (सीपीसीआरआई) में कार्यान्वित किया जा रहा है। आईसीएआर रोपण फसल क्षेत्र में सीपीसीआरआई भी उद्गम संस्थान है और इसने चार संस्थानों अर्थात आईसीएआर- केन्द्रीय तटीय मसाला अनुसंधान कृषि संस्थान और आईसीएआर-काजू अनुसंधान निदेशालय की स्थापना में योगदान दिया है।

इस संस्थान ने प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान और विकास में एक प्रेरक नेतृत्व प्रदान करते हुए, भारत को नारियल और सुपारी के उत्पादन में विश्व में शीर्ष स्थान पर पहुंचाने में योगदान दिया है। इस संस्थान ने इसकी सर्वोच्चता में बहुत सी विशेषताएं जोड़ी हैं, जिसमें सभी अनिवार्य फसलों में अत्यधिक पैदावार वाली किस्मों का विकास, नए जैव-प्रौद्योगिकीय अनुप्रयोग, रोगों और नाशक-जीवों के लिए जैव-नियंत्रण, क्रॉपिंग सिस्टम की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकियां, फसल से पूर्व और फसल के बाद की प्रक्रियाओं के लिए उन्नत मशीनरी तथा नए मूल्यवर्धित उत्पाद आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकियों के विकास में इसकी उपलब्धि यह है कि यह संस्थान इन प्रौद्योगिकियों को नवीन प्रौद्योगिकी अंतरण पहलों के माध्यम से किसानों और अन्य हितधारियों तक ले जाने में सफल रहा है। किसानों के लिए की गई सेवाओं के लिए आईसीएआर ने वर्ष 2002 में सीपीसीआरआई को 'सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान अवार्ड' प्रदान किया।

डाक विभाग, अनुसंधान के क्षेत्र में भाकृअनुप-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के 100 गौरवशाली वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दो स्मारक डाक टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका	:	श्री सुरेश कुमार
विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा, 1500 पैसा
Denomination	:	500 p, 1500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	601100, 501100
Stamps Printed	:	601100, 501100
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.10 लाख
Miniature Sheet Printed	:	1.10 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00